17 जून 2016, कुल पृष्ठ : 8, मूल्य : 2/- आर. एन. आई. 31109/77 JaipurCity / 224 / 2015-17

जैन पथप्रदर्शक

ए-4, बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)

नैतिक एवं सामाजिक चेतना का अग्रदूत निष्पक्ष पाक्षिक

डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल के व्याख्यान प्रतिदिन अब आधे घंटे
जिनवाणी चैनल पर
प्रतिदिन
प्रातः 6.30 से 7.00 बजे तक

वर्ष : 39, अंक : 6 सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** आजीवन शुल्क : 251 रुपये
जून (द्वितीय), 2016 (वीर नि. संवत्-2542) सह-सम्पादक : **डॉ. संजीवकुमार गोधा व पण्डित परमात्मप्रकाश भारिल्ल** वार्षिक शुल्क : 25 रुपये

प्रशिक्षणार्थी सम्मेलन संपन्न

विदिशा (म.प्र.) : यहाँ प्रशिक्षण शिविर के अवसर पर दिनांक 31 मई को रात्रि में श्री महिपालजी शाह बांसवाड़ा की अध्यक्षता में प्रशिक्षणार्थी सम्मेलन संपन्न हुआ। मुख्य अतिथि श्री सिद्धार्थजी दोशी मुम्बई एवं विशिष्ट अतिथि श्री संतोषजी वैद्य खनियांधाना थे। इसके अतिरिक्त डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल, पण्डित रतनचंदजी भारिल्ल, ब्र. सुमतप्रकाशजी खनियांधाना, पण्डित अभयजी शास्त्री देवलाली, पण्डित शांतिकुमारजी पाटील जयपुर, पण्डित कमलचंदजी पिड़ावा, श्री परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल, श्री अध्यात्मप्रकाशजी भारिल्ल आदि महानुभावों के साथ सभी प्रशिक्षक अध्यापकगण भी मंच पर उपस्थित थे। अनेक प्रशिक्षणार्थियों ने अपने विचार हिन्दी, अंग्रेजी व गुजराती भाषा में रखे। सभी ने प्रशिक्षण विधि की प्रशंसा करते हुये अपने नगर में पाठशाला संचालन का संकल्प व्यक्त किया। सैंकड़ों प्रशिक्षार्थियों ने भी अपने नगर में पाठशाला संचालन का संकल्पपत्र भरकर दिया।

अन्त में डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल का प्रशिक्षणार्थियों को विशेष उद्बोधन प्राप्त हुआ।

कार्यक्रम का मंगलाचरण कु. श्रुति जैन कोटा ने एवं संचालन पण्डित निखलेशजी शास्त्री के निर्देशन में शुचि जैन गौरझामर एवं आशुतोष जैन आरोन ने किया।

दीक्षांत व समापन समारोह - दिनांक 1 जून को प्रातः श्री जिनेन्द्र अभिषेक व नित्यनियम पूजन के पश्चात् मण्डप से श्री दिगम्बर जैन बड़ा मंदिर किले अन्दर तक गाजे-बाजे के साथ श्रीजी की शोभायात्रा निकाली गई। इसके पश्चात् शिविर का दीक्षांत एवं समापन समारोह डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल की अध्यक्षता में संपन्न हुआ। मुख्य अतिथि श्री महेन्द्रजी चौधरी एवं श्री सुनीलजी जैन 501 भोपाल तथा विशिष्ट अतिथि श्री धन्नालाल अरुणकुमारजी भोपाल व श्री संजयजी बाटा बीनावाले थे।

शिक्षण शिविर की रिपोर्ट पण्डित सोनूजी शास्त्री सोनगढ, प्रशिक्षण शिविर की रिपोर्ट पण्डित कमलचंदजी पिड़ावा एवं आवासादि की रिपोर्ट पण्डित अविरलजी शास्त्री विदिशा ने दी। पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट के कार्यकारी महामंत्री श्री परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल ने आयोजन समिति के विशेष योगदान का उल्लेख करते हुये प्रमुख पदाधिकारी एवं कार्यकर्ताओं का सम्मान करवाया। सभी को पण्डित शांतिकुमारजी ने तिलक एवं श्री अध्यात्मप्रकाशजी

(शेष पृष्ठ 3 पर ...)

51वाँ प्रशिक्षण शिविर बोरीवली मुम्बई में

बोरीवली मुमुक्षु मण्डल ने संभाला प्रशिक्षण शिविर ध्वज

रविवार दिनांक 29 मई को श्री दिगम्बर जैन मुमुक्षु मण्डल बोरीवली-मुम्बई द्वारा आगामी 51वें प्रशिक्षण शिविर का आमंत्रण हर्षोल्लासपूर्वक दिया गया। बोरीवली मुमुक्षु मण्डल के सदस्यगण मेवों से भरे थाल लेकर गाजते-बाजते मंच पर आये और डॉ. भारिल्ल व पण्डित रतनचंदजी भारिल्ल को श्रीफल भेंटकर सम्मानित किया। विदिशा की शिविर समिति द्वारा बोरीवली मण्डल के सदस्यों का सम्मान करते हुये प्रशिक्षण शिविर का विशेष ध्वज उन्हें थमाया गया। उपस्थित सभी मुमुक्षु भाई-बहिनों ने आगामी शिविर में आने की भावना व्यक्त की।

इस अवसर पर मुम्बई एवं गुजरात से पधारे 51 लोगों के प्रतिनिधि मण्डल ने 51वें प्रशिक्षण शिविर का आमंत्रण दिया, जिनमें श्री अशोक वीरचंद शाह, श्री मुकुन्द कस्तूरचंद शाह, श्री भूपेन्द्र बाबूलाल शाह, श्री हंसमुखलाल डाह्यालाल शाह, श्री निर्मल मुकुन्द शाह, श्री राजेश धीरजलाल शेठ, श्री पंकज ज्ञानचंद गोधा आदि महानुभाव प्रमुख थे।

धूमधाम से दिया शिखरजी का आमंत्रण

विदिशा (म.प्र.) : यहाँ शिक्षण-प्रशिक्षण शिविर के अवसर पर दिनांक 22 मई को प्रातः तत्त्ववेत्ता डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल के प्रवचनोपरान्त तीर्थधाम सम्मेदशिखरजी में होने वाले पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट की स्वर्ण जयंती समारोह एवं समयसार विधान का भावभीना आमंत्रण पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट एवं श्री टोडरमल स्नातक परिषद् द्वारा दिया गया।

कार्यक्रम के उद्घाटनकर्त्ता श्री अजितजी जैन बड़ौदा, अध्यक्ष श्री अजितप्रसादजी जैन दिल्ली, मुख्य अतिथि श्री प्रेमचंदजी बजाज कोटा तथा विशिष्ट अतिथि श्री आदीशजी जैन दिल्ली व श्री मुकेशजी जैन ढाईद्वीप इन्दौर थे।

इस अवसर पर डॉ. भारिल्ल के अतिरिक्त पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली, पण्डित शांतिकुमारजी पाटील जयपुर, पण्डित परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल जयपुर, पण्डित विपिनजी शास्त्री मुम्बई सहित लगभग 200 स्नातक विद्वान आमंत्रण देने हेतु मंच पर उपस्थित थे। श्री अध्यात्मप्रकाशजी भारिल्ल ने कवितापाठ द्वारा आमंत्रण दिया।

इसके अतिरिक्त वर्तमान विद्यार्थीगण धर्मध्वज, पुष्प, स्वर्ण जयंती लोगो आदि लेते हुये मंच तक गाजे-बाजे के साथ अत्यंत उत्साहपूर्वक पहुंचे। पूरा मंच विद्वानों से भर गया था। डॉ. भारिल्ल ने अपने उद्बोधन में सभी साधर्मीजनों

(शेष पृष्ठ 8 पर ...)

सम्पादकीय –

संस्कारों का महत्व

– पण्डित रतनचन्द भारिल्ल

(गतांक से आगे...)

सभी प्रकार का मांसाहार तो चलते–फिरते त्रसजीवों के घात से बनता है, अत: वह तो त्रसघात नामक अभक्ष्य है ही, मुर्गी के सभी प्रकार के अंडों से बने खाद्य पदार्थ भी मांसाहार ही है। जिन अंडों से मुर्गी के चूजे (बच्चे) पैदा नहीं होते उन अण्डों में भी सूक्ष्म त्रसजीव निरंतर पैदा होते रहते हैं, अत: वे भी मांसाहार ही हैं। उन्हें शाकाहारी कहकर नहीं खाया जा सकता।

अत: यह सब तो त्रसघात अभक्ष्य हैं ही, इनके अतिरिक्त बासा भोजन, पुराने अचार–मुरब्बा आदि में भी दो–इन्द्रिय आदि त्रस जीव पैदा हो जाते हैं, अत: वह भी त्रसघात अभक्ष्य है।

कोई भी करुणावन्त दयालु व्यक्ति इनका सेवन कैसे कर सकता है ? क्योंकि ये भी तो हम–तुम जैसे ही प्राणी हैं। इनकी हिंसा महापाप है।

शराब और शहद में भी अनंत जीव निरंतर पैदा होते रहते हैं। शहद भले अनिष्ट न हो, पर उसमें न केवल फलों का रस ही होता है, बल्कि फूलों के रस के साथ असंख्य मधुमक्खियों के अंडे भी मिल जाते हैं। मधुमक्खियों की लार एवं मल–मूत्र भी मिल जाता है; क्योंकि उनके छत्ते में न तो अलग से कोई यूरिनल (पेशाबघर) होता है और न संडास। तथा फूलों का रस लाने के लिये उनके पास केवल मुँह ही बर्तन के रूप में होता है, जिसे न धोने–मांजने की व्यवस्था है, न दातुन–कुल्ला करने का कोई टूथपेस्ट और मंजन। वे मक्खियाँ उसी मुँह से गंदगी भी खाती है और उसी गंदे मुँह में फूलों का रस भरकर लाती हैं।

अब आप ही सोच लीजिए, मधु (शहद) भक्ष्य है या अभक्ष्य? हमारे विचार से तो शहद खाना तो दूर, छूने लायक भी नहीं है; क्योंकि वह मल–मूत्र, और थूक–लार का मधुर मिश्रण है। अत: आज से आप मरीजों को भी वे दवायें न दें, जिनमें मद्य, मधु, मांस मिले रहते हैं।

दूसरे प्रकार के अभक्ष्य पदार्थ वे हैं, जो बहुत से स्थावर जीवों के घात से बनते हैं, उन्हें बहुघात अभक्ष्य कहते हैं। आलू आदि सम्पूर्ण जमीकन्द इसी श्रेणी में आते हैं।

राजू ने कहा –''आलू, प्याज, लहसन आदि के काटने पर उनमें जीव तो दिखाई देते नहीं, भिण्डी, फली आदि की भांति उनमें लटें वगैरह भी नहीं पड़ती, फिर यह कैसे मान लिया जाये कि उनमें जीव होते हैं ?''

छात्र ने शास्त्र के आधार से राजू को चुप करने के बजाय युक्ति से समझाकर उसके गले उतारते हुये कहा –''देखो ! आलू में अनंत जीव होने का सबसे बड़ा प्रमाण तो यही है कि वे टोकरी में रखे –रखे भी बढते हैं, हमेशा ताजे से रखे रहते हैं, सूखते नहीं, सड़ते भी नहीं।

जिस तरह हमारे–तुम्हारे शरीर में जब तक जीव रहता है तब तक यह शरीर सड़ता नहीं, सड़ान की दुर्गन्ध भी नहीं आती और प्राणान्त होते ही सड़ने लगता है। यही आलू, प्याज की स्थिति है।''

डॉक्टर ने कहा – ''पर्यूषण पर्व में मैंने एक दिन छहढाला पर हो रहे प्रवचन में सुना था कि निगोदिया जीवों की आयु बहुत कम होती है। वे एक श्वांस में अठारह बार जन्म–मरण कर लेते हैं। श्वांस भी सांस लेने वाली श्वांस नहीं, बल्कि हाथ की नाड़ी के एक बार फड़कने को एक श्वांस कहा गया है, जो लगभग एक मिनट में अस्सी बार फड़कती है।

जो जीव इतने जल्दी मर–जी लेते हैं, उनका घात कौन कर सकता है ? जब तक उन्हें कोई घात करने की सोचेगा, उसके पहले तो वे न जाने कितने बार जी–मर लेंगे ? और ये ही निगोदिया जीव आलू आदि जमीकंद में हैं – ऐसा कहा जाता है। ऐसी स्थिति में आलू खाने से बहुघात कैसे हुआ ? वे जीव तो आलू के न पकाने एवं खाने पर भी रखे हुये आलूओं में जी–मर रहे हैं। आलू खाने न खाने से उन निगोदिया जीवों के सुख–दु:ख में क्या फर्क पड़ने वाला है ? वे तो अपनी नियति के अनुसार अपना कर्मुल भोग ही रहे हैं। फिर आलू आदि का त्याग क्यों कराया जाता है ?''

छात्रों में से एक सीनियर छात्र बोला – ''डॉक्टर साहब ! आपकी तर्क और युक्तियाँ तो ठीक हैं। और आपने इस विषय पर इतना सोचा सो यह भी बहुत बड़ी बात है, पर जैनधर्म के अनुसार पाप–पुण्य का बन्ध जीवों के मरने न मरने के बजाय खाने वाले के परिणामों पर अधिक निर्भर करता है। जिसे यह मालूम हो जाय कि यह तो जीवों का ही कलेवर है और इसमें प्रतिसमय अनंत जीव मर–जी रहे हैं, वह भला उसे कैसे खा सकेगा ? तीव्र राग के बिना और अत्यन्त निर्दय क्रूरता के बिना उस पदार्थ का खाना संभव ही नहीं है। ये अत्यन्त निर्दय परिणाम क्रूरता और तीव्रराग ही वास्तविक पाप भाव है एवं बंध के कारण हैं। जीवों का मरना तो निमित्त मात्र है। जीव–घात न भी हो तो भी इस क्रूरता के परिणामों से पाप–बन्ध तो होगा ही। वस्तुत: आत्मा में राग आदि विकारों की उत्पत्ति ही हिंसा है और इन रागादि विकारों की उत्पत्ति न होना ही अहिंसा है।''

(क्रमश:)

आध्यात्मिक संगोष्ठियाँ संपन्न

विदिशा (म.प्र.) : यहाँ प्रशिक्षण शिविर के अवसर पर दिनांक 23 मई को **'क्रमबद्धपर्याय'** विषय पर गोष्ठी का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर मुख्य वक्ता के रूप में पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली उपस्थित थे। इसके अतिरिक्त रीतेशजी शास्त्री बांसवाड़ा, डॉ. महावीरजी शास्त्री उदयपुर, जिनेशजी शेठ मुम्बई आदि ने अपना वक्तव्य प्रस्तुत किया। गोष्ठी का मंगलाचरण मनीषजी सिद्धांत नागपुर ने एवं संचालन आशीषजी शास्त्री भिण्ड ने किया।

दिनांक 24 मई को **' निमित्त–उपादान'** विषय पर गोष्ठी का आयोजन किया गया। इस अवसर पर मुख्य वक्ता के रूप में प्रो. ए.डी. शर्मा (दर्शनविभागाध्यक्ष–केन्द्रीय विश्वविद्यालय, सागर) उपस्थित थे। इसके अतिरिक्त अंकितजी शास्त्री धार, रत्नेशजी शास्त्री सोनागिर, नितेशजी शास्त्री कोटा, शुभमजी शास्त्री सिद्धायतन, जिनकुमारजी शास्त्री जयपुर ने अपना वक्तव्य प्रस्तुत किया।

गोष्ठी का मंगलाचरण श्री विवेकजी शास्त्री दलपतपुर ने एवं संचालन श्रीमती परिणति शास्त्री विदिशा ने किया।

अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन मध्यप्रदेश का –

प्रांतीय अधिवेशन संपन्न

विदिशा (म.प्र.) : अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन का मध्यप्रदेश प्रांतीय अधिवेशन फैडरेशन के मध्यप्रदेश प्रांतीय अध्यक्ष श्री विजयजी बड़जात्या इन्दौर की अध्यक्षता में दिनांक 20 मई 2016 को विदिशा में सानन्द संपन्न हुआ, जिसमें देश के विभिन्न भागों से पधारे अनेक प्रतिनिधियों व पदाधिकारियों ने भाग लिया।

इस अवसर पर सम्पूर्ण मध्यप्रदेश की इकाईयों ने अपने–अपने कार्यों का विवरण प्रस्तुत किया। साथ ही जिन शाखाओं द्वारा सराहनीय कार्य किये गये उन्हें पुरस्कृत भी किया गया, जिनमें विदिशा, ग्वालियर, भिण्ड, जबलपुर, करेली, राघौगढ, इन्दौर की शाखाओं के कार्यों की विशेष सराहना की गई।

आगामी माह में आने वाले व्रत त्यौहार की जानकारी वाला समय चक्र का विमोचन उपस्थित अतिथियों द्वारा किया गया। श्री विजयजी बड़जात्या द्वारा आगामी वर्ष में पुरस्कार के मापदंड भी निर्धारित किये गये। साथ ही फैडरेशन के राष्ट्रीय महामंत्री श्री परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल ने भी सम्बोधित किया। इसके अतिरिक्त कार्यक्रम में नई कार्यकारिणी का गठन किया गया एवं सभी को शपथ विधि का कार्यक्रम ब्र. सुमतप्रकाशजी खनियांधाना द्वारा संपन्न कराया गया। इस अवसर पर अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन मध्यप्रदेश द्वारा श्री विजयजी बड़जात्या, श्री पदमजी पहाड़िया, श्री राजेशजी काला का सम्मान प्रतीक चिह्न प्रदानकर किया गया। इसके अतिरिक्त श्रेष्ठ युवा कार्यकर्त्ता के रूप में श्री पुष्पेन्द्र जैन भिण्ड एवं श्री नितिन शास्त्री रायपुर का 11 हजार की सम्मान राशि देकर विशेष सम्मान ब्र. सुमतप्रकाशजी ने अपने करकमलों से किया।

इससे पूर्व दिनांक 19 मई को सम्पूर्ण मध्यप्रदेश एवं छत्तीसगढ से पधारे फैडरेशन की विभिन्न शाखाओं के पदाधिकारियों एवं प्रतिनिधियों की एक अंतरंग मीटिंग संपन्न हुई, जिसमें सभी प्रतिनिधियों ने अपनी–अपनी शाखाओं के कार्यों और आगामी कार्यक्रमों की विस्तृत रिपोर्ट प्रस्तुत की।

(पृष्ठ 1 का शेष...)

भारिल्ल ने माल्यार्पण किया।

मुख्य अतिथि एवं विशिष्ट अतिथियों के साथ पण्डित शिखरचंदजी, डॉ. आर. के. जैन एवं श्रीमती सुशीलाजी बड़कुल (ध.प. स्व.श्री जवाहरलालजी बड़कुल) ने भी अपने विशेष वक्तव्य में प्रशिक्षण शिविर की उपयोगिता पर प्रकाश डाला। डॉ. भारिल्ल के अध्यक्षीय एवं दीक्षांत भाषण के पश्चात् सभी प्रशिक्षणार्थियों को पुरस्कार वितरण किया गया।

बालबोध प्रशिक्षण में प्रथम स्थान कु. दीपिका जैन छिन्दवाड़ा व कु. प्रियंका जैन उदयपुर ने, द्वितीय स्थान सक्षम जैन मंगलायतन व प्रियंका सिंघई भोपाल ने, तृतीय स्थान संयम जैन खैरवाडवास व दीपाली जैन भोपाल ने प्राप्त किया।

प्रवेशिका प्रशिक्षण में प्रथम स्थान शाश्वत जैन भोपाल ने, द्वितीय स्थान संदीप जैन कुम्हेर ने और तृतीय स्थान कु. स्वरूपा संजय राउत औरंगाबाद व कु. शुचि जैन गौरझामर ने प्राप्त किया।

मुम्बई में डॉ भारिल्ल के विशेष प्रवचन

मुम्बई : यहाँ श्री कुन्दकुन्दकहान दिगम्बर जैन उत्कर्ष मुमुक्षु मण्डल मलाड के विशेष आग्रह पर डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल द्वारा दिनांक 11 से 13 जून तक मलाड (ईस्ट) में रामलीला मैदान के हॉल में समयसार की गाथा 73 पर विशेष मार्मिक प्रवचन हुये। इस अवसर पर लगभग 250 साधर्मियों ने प्रवचनों का लाभ लिया।

दिनांक 12 जून को स्वर्ण जयंती शिखरजी शिविर का आमंत्रण पण्डित विपिनजी शास्त्री एवं अध्यात्मप्रकाशजी भारिल्ल ने दिया। इस अवसर पर पण्डित रूपेशजी शास्त्री, पण्डित अनिलजी शास्त्री, पण्डित जितेन्द्रजी शास्त्री एवं पण्डित पवनजी शास्त्री भी उपस्थित रहे। **– प्रवीणभाई शाह, मलाड**

आई.ए.एस. में चयन पर विशेष सत्कार

विदिशा (म.प्र.) : यहाँ प्रशिक्षण शिविर के अवसर पर दिनांक 25 मई की रात्रि में श्री टोडरमल महाविद्यालय के स्नताक पण्डित संजयजी बासल्ल के सुपुत्र प्रमयेश बासल्ल ने भारतीय प्रशासनिक सेवा परीक्षा (आई.ए.एस.)में 109वीं रैंक एवं पण्डित राजकुमारजी शास्त्री उदयपुर के सुपुत्र अगम जैन ने 133वीं रैंक प्राप्त कर मुमुक्षु समाज एवं श्री टोडरमल महाविद्यालय को गौरव प्रदान किया है। इस उपलक्ष्य में पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट द्वारा दोनों को प्रशस्ति–पत्र देकर सम्मानित किया गया। इस अवसर पर डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल, पण्डित रतनचंदजी भारिल्ल आदि विद्वत्जनों के साथ दोनों के माता–पिता आदि परिजन भी मंच पर उपस्थित थे।

अ.भा. दिगम्बर जैन विद्वत्परिषद् की ओर से भी डॉ. राजेन्द्र बंसल ने भी प्रशस्ति–पत्र देकर दोनों का सम्मान किया। संचालन पण्डित विपिनजी शास्त्री मुम्बई ने किया।

विदिशा में मनाया संकल्प दिवस

विदिशा (म.प्र.) : यहाँ प्रशिक्षण शिविर के अवसर पर दिनांक 25 मई को हमारे गुरुवर्य **डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल** का जन्मदिवस प्रतिवर्ष की भांति संकल्प दिवस के रूप में मनाया गया। सर्वप्रथम डॉ. भारिल्ल व पण्डित रतनचंदजी भारिल्ल को सपरिवार पण्डित टोडरमल स्नातक परिषद् के सभी सदस्य गाजे–बाजे के साथ उत्साहपूर्वक मण्डप के मुख्य हॉल से मंच तक लेकर आये। उसके पश्चात् श्री अमितजी जैन इंजीनियर रेलवे विभाग दिल्ली एवं श्री अजितकुमारजी जैन पूर्व कमिश्नर एक्साइज लखनऊ के मुख्य आतिथ्य में प्रारम्भ हुये समारोह में सर्वप्रथम पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री ने डॉ. भारिल्ल के व्यक्तित्व पर विस्तार से प्रकाश डाला। पण्डित शांतिकुमारजी पाटील ने सभी स्नातकों को आजीवन तत्त्वप्रचार–प्रसार का संकल्प दिलाया। सभी स्नातकों ने खड़े होकर आजीवन तत्त्वप्रचार करने का संकल्प लिया।

इसी अवसर पर डॉ. भारिल्ल एवं पण्डित रतनचंदजी भारिल्ल के प्रशिक्षण शिविर के साथ ही जिनवाणी के प्रचार–प्रसार में जीवन समर्पित करने हेतु दि.जैन मुमुक्षु मण्डल विदिशा की ओर से शिक्षण–प्रशिक्षण शिविर समिति द्वारा तिलक, माल्यार्पण, श्रीफल भेंट करते हुये रजत टोपी पहनाकर विशेष सम्मान किया गया।

स्वर्ण जयंती के मायने (7)

(उपयुक्त रीति–नीति व उसके सुपरिणाम)

– **परमात्मप्रकाश भारिल्ल** (कार्यकारी महामंत्री–टोडरमल स्मारक ट्रस्ट)

इसे इस युग का स्वर्णकाल ही कहा जायेगा कि पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट जैसी मात्र तत्त्वज्ञान के प्रचार में संलग्न संस्था 50 वर्षों तक सतत् सक्रियतापूर्वक अपना कार्य करते हुये आज सम्पूर्ण जोश और हर्षोल्लास के साथ अपना स्वर्णजयन्ती वर्ष मना रही है।

आज के इस भोगप्रधान युग में जब वर्षों की मेहनत और करोड़ों की लागत से विकसित की गई भोगसामग्री मात्र कुछ ही दिनों में out of date हो जाती है, अनादि का यह तत्त्वज्ञान आज भी न सिर्फ प्रासंगिक बना हुआ है, वरन् दिन–प्रतिदिन प्रचार–प्रसार के नये–नये कीर्तिमान स्थापित कर रहा है।

इस युग में यह तत्त्वज्ञान जीवित है और हमें सहज सुलभ है तो इसका एकमात्र श्रेय परमउपकारी, पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी को ही जाता है।

पूज्य गुरुदेवश्री ने न सिर्फ अध्यात्मग्रंथों में व्याप्त इस आत्महितकारी तत्त्वज्ञान को उद्घाटित एवं आत्मसात किया वरन् **हमें वह तकनीक भी प्रदान की जिसके द्वारा इस तत्त्वज्ञान को जन–जन की वस्तु बनाया जा सकता है। अखिल विश्व के कोने–कोने तक पहुंचाया जा सकता है तथा एक दीर्घ आयु प्रदान की जा सकती है।**

यदि मैं पूज्य गुरुदेवश्री के अकथ्य, प्रयुक्त एवं अनुभूत रीति–नीति को भाषा देने का प्रयास करूं तो कहा जा सकता है –

''विरोध मत करो, विरोध की परवाह भी मत करो, जो कृत्य है वह करते रहो, सफलता आपके कदम चूमेगी''

कहा भी जाता है न कि **'विरोध प्रचार की कुंजी है'**

जाहिर है यदि आप किसी का विरोध करेंगे तो प्रचार उसका होगा और यदि कोई आपका विरोध करेगा तो प्रचार आपका होगा।

बेहतर है कि हमारा ही प्रचार हो, बस इसीलिये पूज्य गुरुदेवश्री का अनुकरण करते हुये दूसरा काम हमने दूसरों के लिये छोड़ दिया है।

पूज्य गुरुदेवश्री अपने जीवनभर सतत् अध्यात्मशास्त्रों का दोहन करते रहे, उनके मर्म को प्रकट करते रहे और उनके विरोधी उनका विरोध करते रहे। पूज्य गुरुदेवश्री ने जब भी अध्यात्म के जिन आत्महितकारी रहस्यों को उद्घाटित किया, उनके विरोधियों ने अविलम्ब उन्हें वहां तक पहुंचा दिया, अन्यथा जहाँ पहुंचने की कभी कल्पना भी नहीं की जा सकती थी। यह उनके विरोधियों की ही कृपा है कि जैनदर्शन के जिन मूलभूत सिद्धांतों की कभी चर्चा तक नहीं होती थी, सामान्यजन की तो बात ही क्या, विद्वानों के बीच भी जो विषय अछूते ही थे, उनके बारे में आज समाज का बच्चा–बच्चा जानता है कि इस विषय में पूज्य गुरुदेवश्री क्या कहते थे।

विषयवस्तु एकबार सामान्यजन के ज्ञान का ज्ञेय तो बने। फिर तो जिनकी होनहार अच्छी होगी, संसार सागर का किनारा निकट होगा वह तो इसके रहस्य को खोज ही लेगा, पा ही लेगा।

''प्रतिरोध विरोध को हवा देता है, बढाता है''

यदि प्रतिरोध ही न होगा तो आखिर कोई इकतरफा ही कब तक लड़ेगा ? यदि सामने कोई हो ही नहीं तो कोई कब तक मात्र हवा में ही तलवारें लहरायेगा ? कषाय को भी तो आखिर ईंधन चाहिये। पूज्य गुरुदेवश्री से प्रेरणा पाकर उनकी उक्त नीति का पालन करते हुये हम शांतिपूर्वक अपने कार्य में लगे रहे, रचनात्मक कार्य करते रहे, जनभाषा में नवीन साहित्य की रचना करते रहे, महाविद्यालय खोला और जैनदर्शन के अधिकारी विद्वान तैयार करते रहे, हमारे विद्वान गाँव–गाँव व देश–विदेशों में जाकर घर–घर तक यह तत्त्वज्ञान पहुंचाते रहे, उसके मर्म को को उद्घाटित करते रहे, भ्रमजनित भ्रान्तियों का निवारण करते रहे।

हमने विरोधियों से विरोधभरा नहीं साधर्मी के योग्य व्यवहार किया, हम उनपर क्रोधित नहीं हुये सहिष्णु बने रहे। **अपने आगमसम्मत तत्त्व व सिद्धांतों पर कायम रहते हुये लोकव्यवहार में चूके नहीं।** हमारी यह साधना और श्रम सार्थक हुआ, विरोधी नम्र हुये, विरोध की धार कुंद हुई, दूरियां कम हुई, निकटता आई, अपरिचयजन्य भय व आशंकाएं निर्मूल हुई, अस्वीकार्यता कम हुई, स्वीकार्यता बढी।

परिणाम यह हुआ कि सामान्यजन को अहसास हुआ कि –

''अरे ! ये तो सज्जन लोग हैं, इनमें ऐसा खतरनाक जैसा तो कुछ है नहीं जैसा इनके बारे में प्रचार किया जाता था। इनकी बातों और तत्त्व प्ररूपण में भी तो कोई विरोधाभास नहीं है, सबकुछ आगमसम्मत ही तो है, आगम में वर्णित नय–निक्षेप व सभी विवक्षायें और अपेक्षायें स्पष्ट होने से यह विरोधाभास रहित है।''

इसप्रकार सहज ही समाज में सौहार्द और सहिष्णुता का वातावरण निर्मित हुआ, तत्त्वप्रचार को बल मिला और इसी का सुपरिणाम आज हम सबके सामने है। **(क्रमशः)**

आगामी कार्यक्रम...

'मोना' (MONA) द्वारा आदरणीय बाबू जुगलकिशोरजी 'युगल' की स्मृति में दो शिविर आयोजित किये जायेंगे –

(1) तीर्थधाम मंगलायतन–अलीगढ में दिनांक 26 से 31 अक्टूबर 2016 तक कर्त्ता–कर्म अधिकार एवं चैतन्य की चहल–पहल विषय पर।
(2) देवलाली–नासिक में दिनांक 7 से 14 नवम्बर 2016 तक सर्वविशुद्धज्ञान अधिकार एवं चैतन्य की चहल–पहल विषय पर।

सभी साधर्मीजन शिविर में पधारकर धर्मलाभ लें।

स्वर्ण जयंती प्रशिक्षण शिविर में प्रथम बार अंग्रेजी में प्रशिक्षण

विदिशा (म.प्र.) : यहाँ प्रशिक्षण शिविर के अवसर पर इस वर्ष ब्र. सुमतप्रकाशजी की विशेष प्रेरणा से प्रथम बार अंग्रेजी में भी बालबोध प्रशिक्षण की कक्षाओं का संचालन किया गया। अंग्रेजी में अध्यापन कार्य श्रीमती स्वानुभूति शास्त्री, आराध्य टडैया शास्त्री एवं जिनेश शेठ मुम्बई द्वारा संपन्न हुआ। इन कक्षाओं में 22 प्रशिक्षणार्थियों ने प्रशिक्षण प्राप्त किया, यह स्वर्ण जयंती प्रशिक्षण शिविर की विशेष उपलब्धि रही।

शोक समाचार

(1) कोटा (राज.) निवासी पण्डित रामकिशोरजी का दिनांक 8 जून को शांतपरिणामोंपूर्वक देहावसान हो गया। ज्ञातव्य है कि आप बाबू जुगलकिशोरजी युगल के लघुभ्राता थे।

(2) खनियांधाना (म.प्र.) नगर के गौरव श्री शिखरचंदजी पुजारी का दिनांक 30 मई को विदिशा प्रशिक्षण-शिविर में दोपहर 3 बजे प्रवचन सुनते हुये शांतपरिणामोंपूर्वक देहावसान हो गया। ज्ञातव्य है कि आप श्री संजय पुजारी खनियांधाना के पिताजी थे।

(3) गंजबासौदा (म.प्र.) निवासी श्री गुलाबचंदजी जैन का दिनांक 15 मई को शांतपरिणामोंपूर्वक हो गया। आप विदिशा प्रशिक्षण शिविर के उपाध्यक्ष थे। आपकी स्मृति में संस्था को 1002/- रुपये प्राप्त हुये।

(4) उज्जैन (म.प्र.) निवासी श्री बिरधीचन्दजी जैन की स्मृति में संस्था को 1100/- रुपये प्राप्त हुये।

दिवंगत आत्मायें चतुर्गति के दु:खों से छूटकर शीघ्र ही अनंत अतीन्द्रिय आनंद को प्राप्त हों - यही मंगल भावना है।

भूलसुधार - विगत 2 जून के अंक में जयपुर शिविर की दिनांक भूलवश गलत छप गई थी। शिविर का सही विवरण निम्नानुसार है -

श्री कुन्दकुन्द कहान दि. जैन तीर्थसुरक्षा ट्रस्ट, मुम्बई द्वारा

ज्ञानतीर्थ श्री टोडरमल स्मारक भवन जयपुर में

39वाँ आध्यात्मिक शिक्षण-शिविर

(रविवार, दिनांक 31 जुलाई से मंगलवार 9 अगस्त, 2016 तक)

शिविर में तत्त्ववेत्ता डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल एवं अन्य अनेक विद्वानों के प्रवचनों एवं कक्षाओं का लाभ प्राप्त होगा।

शिविर में जयपुर आने हेतु अपने टिकिट शीघ्र करा लेवें। कृपया आवास आदि की समुचित व्यवस्था हेतु अपने पधारने की पूर्व सूचना जयपुर कार्यालय को अवश्य भेजें।

शिविर में पधारने हेतु आप सभी सादर आमंत्रित हैं।

संपर्क सूत्र - पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट, ए-4, बापूनगर, जयपुर 302015 (राज.) फोन : 0141-2705581, 2707458

ग्रीष्मकालीन शिक्षण शिविर संपन्न

चेन्नई (तमिलनाडु) : यहाँ आचार्य कुन्दकुन्द जैन संस्कृति केन्द्र व आचार्य कुन्दकुन्द तत्त्वप्रचार केन्द्र पोन्नूर हिल के तत्त्वावधान में विभिन्न चार जैन मंदिरों में ग्रीष्मकालीन जैन धार्मिक शिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर पण्डित जम्बूकुमारजी शास्त्री, डॉ. उमापतिजी शास्त्री, पण्डित इलंगोवनजी शास्त्री, पण्डित अशोककुमारजी शास्त्री, पण्डित जयराजनजी शास्त्री, पण्डित नाभिराजजी शास्त्री, पण्डित वसंतजी शास्त्री, पण्डित विनोदकुमारजी शास्त्री, श्रीकांतजी जैन, महावीरजी जैन आदि विद्वानों द्वारा प्रवचनों, कक्षाओं व अन्य गतिविधियों का लाभ मिला। इन शिविरों में बालबोध पाठमाला, वीतराग-विज्ञान पाठमाला, तत्त्वार्थसूत्र एवं मोक्षमार्गप्रकाशक की कक्षायें ली गईं। अंतिम दिन परीक्षा आयोजित करके पुरस्कार वितरण भी किया गया।

ये शिविर दिनांक 6 से 8 मई तक श्री चन्द्रप्रभ दिगम्बर जैन मंदिर, साहुकारपेट में, दिनांक 20 से 22 मई तक श्री आदि भगवान दिगम्बर जैन मंदिर पम्मल में, दिनांक 22 से 24 मई तक श्री अजितनाथ दिगंबर जैन मंदिर अम्बत्तूर में एवं दिनांक 27 से 29 मई तक श्री विजय पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन मंदिर कोलत्तूर में लगाये गये इन शिविरों में सैंकड़ों साधर्मियों ने धर्मलाभ लिया।

शिविर के आयोजन में आचार्य कुन्दकुन्द जैन संस्कृति केन्द्र के ट्रस्टी श्री वी.सी. श्रीपालन व सी एस पी जैन के साथ-साथ स्थानीय मंदिरों के ट्रस्टी भी तन-मन-धन से जुड़े रहे। - **बी. उमापति जैन**

बाल एवं युवा संस्कार शिविर संपन्न

भोपाल (म.प्र.) : यहाँ श्री दिगम्बर जैन मुमुक्षु मण्डल भोपाल एवं जैन युवा फैडरेशन भोपाल द्वारा दिनांक 5 से 12 जून तक 10वें बाल एवं युवा संस्कार शिक्षण शिविर का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री खैरागढ के अतिरिक्त 8 शास्त्री विद्वानों के प्रवचनों व कक्षाओं का लाभ मिला। शिविर में 500 से अधिक साधर्मियों ने धर्मलाभ लिया। दिनांक 9 जून को श्रुतपंचमी पर्व के अवसर पर भव्य जिनवाणी शोभायात्रा निकाली गई। यह शिक्षण शिविर पण्डित विरागजी शास्त्री के निर्देशन में संपन्न हुये।

आध्यात्मिक चेतना शिविर संपन्न

अजमेर (राज.) : यहाँ श्री ऋषभायतन अध्यात्मधाम व सीमन्धर जिनालय पुरानी मंडी में श्री वीतराग विज्ञान स्वाध्याय मंदिर ट्रस्ट के तत्त्वावधान में दिनांक 28 मई से 6 जून तक 26वाँ ग्रीष्मकालीन आध्यात्मिक बाल, युवा एवं प्रौढ चेतना शिविर सानन्द संपन्न हुआ।

इस अवसर पर पण्डित सुनीलजी कोटा, पण्डित अश्विनजी नानावटी बांसवाड़ा, पण्डित अविरलजी पिड़ावा आदि विद्वानों द्वारा कक्षाओं का लाभ मिला। शिविर में अनेक बच्चों सहित सैंकड़ों साधर्मियों ने धर्मलाभ लिया। **- प्रकाशचंद पाण्ड्या**

श्रुतपंचमी पर्व सानन्द संपन्न

(1) जयपुर (राज.) : यहाँ श्री टोडरमल स्मारक भवन में दिनांक 9 जून को पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट एवं वीतराग विज्ञान महिला मण्डल बापूनगर के संयुक्त तत्त्वावधान में श्रुतपंचमी पर्व अत्यंत हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। प्रात: 6.30 बजे सभी बहिनों द्वारा अपने सिर पर षट्खण्डागम ग्रन्थ के सभी भागों को लेकर शोभायात्रा निकाली गई। तत्पश्चात् पंचतीर्थ जिनालय पर विशेष पूजन का कार्यक्रम संपन्न हुआ। इस अवसर पर पण्डित शान्तिकुमारजी पाटील द्वारा श्रुतपंचमी विषय पर मार्मिक व्याख्यान का लाभ मिला। साथ ही आध्यात्मिकसत्पुरुष श्रीकानजीस्वामी एवं डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल के श्रुतपंचमी विषय पर सी.डी. व वीडियो प्रवचन भी हुये। दिनांक 10 जून को रात्रि में महिला मण्डल द्वारा गोष्ठी का आयोजन किया गया। सभी कार्यक्रम पण्डित शान्तिकुमारजी पाटील के निर्देशन में संपन्न हुये।

(2) विदिशा (म.प्र.) : यहाँ श्री शीतलनाथ जैन बड़ा मंदिर किला अंदर में दिनांक 9 जून को श्रुतपंचमी महोत्सव का आयोजन किया गया। इस अवसर पर प्रात: 7 बजे जिनेन्द्र अभिषेक एवं पूजन–विधान का कार्यक्रम हुआ। तत्पश्चात् ब्र. अमित भैया द्वारा श्रुतपंचमी पर्व पर प्रवचन हुये।

(3) छिन्दवाड़ा (म.प्र.) : यहाँ श्री आदिनाथ जिनालय गोलगंज में श्री दिगम्बर जैन मुमुक्षु मण्डल एवं अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन के संयुक्त तत्त्वावधान में दिनांक 9 जून को श्रुतपंचमी महोत्सव मनाया गया। इसके अन्तर्गत प्रात: देव–शास्त्र–गुरु पूजन के पश्चात् जिनवाणी शोभायात्रा निकाली गई।

(4) दुबई : यहाँ श्रुतपंचमी पर्व के अवसर पर जिनवाणी पूजन के अतिरिक्त डॉ. नीतेश शाह द्वारा मार्मिक व्याख्यान का लाभ मिला। इसके अतिरिक्त पाठशाला के बच्चों द्वारा जिनवाणी सजाओ प्रतियोगिता का आयोजन किया गया।

(5) दिल्ली : यहाँ विश्वास नगर स्थित श्री दिगम्बर जैन कुन्दकुन्द कहान परमागम चैत्यालय में ज्ञान चेतना ट्रस्ट के तत्त्वावधान में श्रुतपंचमी पर्व के अवसर पर दिनांक 11 व 12 जून को श्रुतस्कंध विधान का आयोजन किया गया। इस अवसर पर पण्डित राकेशजी शास्त्री घेवरा मोड, पण्डित सुदीपजी शास्त्री आदि का समागम प्राप्त हुआ। दिनांक 12 जून को प्रात: जिनेन्द्र–पूजन के उपरान्त जिनवाणी पालकी शोभायात्रा निकाली गई। विधि विधान के समस्त कार्य पण्डित राकेशजी के निर्देशन में पण्डित सुमितजी, पण्डित विवेकजी, पण्डित मयंकजी एवं पण्डित अरहंतजी के सहयोग से संपन्न हुये।

(6) उदयपुर (राज.) : यहाँ श्री चन्द्रप्रभ दिगम्बर जैन मुमुक्षु मण्डल मुखर्जी चौक मंदिर में दिनांक 9 जून को श्रुतपंचमी पर्व मनाया गया। प्रात: श्रुतपंचमी की पूजन की गई। तत्पश्चात् विशाल जुलूस का आयोजन किया गया। तत्पश्चात् डॉ. महावीरप्रसादजी शास्त्री द्वारा श्रुतपंचमी विषय पर प्रवचन हुआ। सायंकाल पण्डित खेमचंदजी शास्त्री द्वारा प्रवचन हुआ। कार्यक्रम का संचालन पण्डित तपिशजी शास्त्री द्वारा किया गया।

श्री टोडरमल स्नातक सम्मेलन संपन्न

विदिशा (म.प्र.) : यहाँ प्रशिक्षण शिविर के अवसर पर दिनांक 21 मई को श्री टोडरमल स्नातक सम्मेलन के अन्तर्गत स्नातक विद्वानों द्वारा **'हम और हमारा स्मारक'** विषय पर गोष्ठी का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर पण्डित राजकुमारजी शास्त्री उदयपुर, पण्डित गुलाबचंदजी बोरालकर एलोरा, श्रीमती स्वानुभूति जैन मुम्बई, पण्डित प्रमोदजी शास्त्री शाहगढ, पण्डित गणतंत्रजी शास्त्री आगरा, पण्डित संतोषजी शास्त्री बकस्वाहा आदि विद्वानों ने अपना वक्तव्य प्रस्तुत किया।

कार्यक्रम की अध्यक्षता श्री सुरेशजी पाटनी कोलकाता ने की। मुख्य अतिथि के रूप में श्री निशिकांतजी औरंगाबाद एवं विशिष्ट अतिथि के रूप में श्री मंगलसेनजी जैन दिल्ली, श्री मुकेशजी ज्ञायक बांसवाड़ा, श्री मुकेशजी जैन मेरठ, श्री सुनीलजी ग्वालियर, श्री सुरेन्द्रकुमारजी जैन छिन्दवाड़ा, डॉ. भरतजी जैन उज्जैन उपस्थित थे।

गोष्ठी का मंगलाचरण श्री विवेकजी शास्त्री पिड़ावा ने एवं संचालन पण्डित शांतिकुमारजी पाटील जयपुर ने किया।

बाल संस्कार शिविर संपन्न

सिद्धायतन–द्रोणगिरि (म.प्र.) : यहाँ श्रुत पंचमी के पावन अवसर पर नौवां आवासीय बाल संस्कार एवं प्रवेश पात्रता शिविर का आयोजन दिनांक 6 से 12 जून तक किया गया।

इस अवसर पर पण्डित राजकुमारजी शास्त्री उदयपुर, पण्डित कमलेशजी शास्त्री टीकमगढ, पण्डित सुमितजी शास्त्री चैतन्यधाम, पण्डित आशीषजी शास्त्री टोंक, पण्डित पंकजजी शास्त्री खड़ैरी, पण्डित सौरभजी शास्त्री इन्दौर, पण्डित संजयजी शास्त्री इन्दौर, पण्डित नीलेशजी शास्त्री घुवारा, पण्डित रत्नेशजी शास्त्री भगवां, पण्डित दीपेशजी शास्त्री तिगोडा, पण्डित जिनेन्द्रजी शास्त्री इन्दौर, डॉ. ममता जैन उदयपुर, श्रीमती प्रिया जैन इन्दौर, सुश्री विपाशा शास्त्री उदयपुर आदि विद्वानों द्वारा बच्चों को मनोवैज्ञानिक पद्धति से नैतिक व धार्मिक शिक्षा का लाभ मिलेगा। इसके अतिरिक्त विभिन्न ज्ञानवर्धक सांस्कृतिक कार्यक्रमों का भी आयोजन किया जायेगा।

इस शिविर में छठवीं कक्षा में प्रवेश लेने वाले विद्यार्थियों की पात्रता परीक्षा आयोजित की गई, जिसमें उत्तीर्ण होने वाले विद्यार्थियों को प्रवेश दिया गया। साथ ही संघ लोक सेवा आयोग में चयनित अभ्यर्थियों का सम्मान भी किया गया।

डॉ. भारिल्ल के आगामी कार्यक्रम

31 जुलाई से 9 अगस्त	**जयपुर**	**महाविद्यालय शिविर**
29 अगस्त से 5 सित.	**मुम्बई**	**श्वेताम्बर पर्यूषण**
6 से 15 सितम्बर	**औरंगाबाद**	**दशलक्षण पर्व**
9 से 14 अक्टूबर	**सम्मेदशिखरजी**	**स्वर्ण जयंती समारोह एवं समयसार विधान**

मोक्षमार्गप्रकाशक स्वाध्याय वर्ष

अध्ययनहेतु प्रश्नोत्तर

नोट :- पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट स्वर्ण जयंती महोत्सव वर्ष के अन्तर्गत मोक्षमार्गप्रकाशक स्वाध्याय वर्ष का संचालन किया जा रहा है। इसकी विस्तृत रूपरेखा जैनपथप्रदर्शक के 2 अप्रैल 2016 के अंक में प्रकाशित की गई है। इस क्रम में तृतीय अध्याय के प्रश्नोत्तर प्रस्तुत हैं। जो भी भाई-बहिन इस योजना से जुड़ना चाहते हैं, वे 09785643202 पर संपर्क करें।

प्रश्न : पुद्गल परमाणु तो जड़ हैं, उन्हें कुछ ज्ञान नहीं है। वे यथायोग्य कर्मप्रकृतिरूप किसप्रकार परिणमित होते हैं ?

उत्तर : जिसप्रकार मुख द्वारा ग्रहण किया गया भोजन अपनी योग्यता से यथायोग्य मांस, शुक्र, खून, हड्डी, मज्जा आदि रूप परिणमित होता है, उसीप्रकार कषाय होने पर योगद्वार द्वारा ग्रहण किये हुये कर्म परमाणु प्रकृति, प्रदेश, स्थिति, अनुभाग रूप परिणमते हैं। ऐसा ही निमित्त-नैमित्तिक संबंध है। विचार करके अपने उद्यम से कुछ करे तो ज्ञान चाहिये, परन्तु निमित्त बनने पर स्वयमेव वैसा परिणमन करे तो वहाँ ज्ञान का कुछ प्रयोजन नहीं है।

प्रश्न : सत्ता में पड़े हुये कर्मों की कैसी अवस्था होती है ?

उत्तर : एकक्षेत्रावगाह रूप में बंधे हुये कर्म जबतक उदय में न आये तब तक मिट्टी के ढेले के समान बिना किसी कार्य के रहते हैं। वहाँ जीव के भाव के निमित्त से कई कर्म प्रकृतियों की अवस्था पलट जाती है। अन्य प्रकृति के परमाणु अन्य प्रकृति रूप संक्रमित हो जाते हैं। उनकी स्थिति में उत्कर्षण (वृद्धि), अपकर्षण (कमी) हो जाता है।

इसप्रकार पूर्व में बंधे हुये परमाणुओं की जीव के परिणामों का निमित्त पाकर अवस्था पलटती है और निमित्त न बने तो नहीं पलटती, ज्यों की त्यों बनी रहती है।

प्रश्न : कर्म की उदयरूप अवस्था कैसी होती है ?

उत्तर : कर्मप्रकृतियों का उदयकाल आने पर उनके अनुभाग के अनुसार कार्य बनता है, कर्म उन कार्यों को उत्पन्न नहीं करते। उनका उदयकाल आने पर स्वयमेव वह कार्य बनता है, इतना ही निमित्त नैमित्तिक संबंध जानना। जिस समय फल उत्पन्न हुआ उसके अनन्तर समय में उन कर्मरूप पुद्गलों को अनुभाग शक्ति का अभाव होने में कर्मत्वपने का अभाव होता है, वे पुद्गल परमाणु अन्य पर्यायरूप परिणमित हो जाते हैं। इसका नाम सविपाक निर्जरा है। इसप्रकार प्रतिसमय उदयहोकर कर्म खिरते हैं।

प्रश्न : द्रव्यकर्म किसे कहते हैं ?

उत्तर : यह कर्म परमाणु रूप अनंत पुद्गल द्रव्यों से उत्पन्न किया हुआ कार्य है। इसलिये उसका नाम द्रव्यकर्म है।

प्रश्न : भावकर्म किसे कहते हैं ?

उत्तर : द्रव्यकर्म के निमित्त से जीव के जो मिथ्यात्व क्रोधादि रूप परिणाम होते हैं, वे भावकर्म हैं।

प्रश्न : नोकर्म किसे कहते हैं ?

उत्तर : नो अर्थात् ईषत् (अल्प)। नोकर्म के उदय से शरीरादि संयोग द्रव्यकर्मवत् सुख दुख का किंचित् कारण होते हैं, अत: इसे नोकर्म कहते हैं।

प्रश्न : इतर निगोद किसे कहते हैं ?

उत्तर : नित्य निगोद से निकलकर जीव त्रसपर्याय धारणकर पुन: निगोद में जन्म ले उसे इतर निगोद कहते हैं।

प्रश्न : ज्ञानावरण दर्शनावरण कर्म के उदय में जीव की कैसी अवस्था होती है ?

उत्तर : ज्ञान का स्वभाव तो त्रिकालवर्ती सर्व द्रव्य-गुण-पर्याय सहित सब पदार्थों को युगपत् प्रत्यक्ष बिना किसी की सहायता के जानने का है, परन्तु अनादि से ज्ञानावरण-दर्शनावरण का संबंध होने से इस शक्ति का व्यक्तपना नहीं होता और उन कर्मों के क्षयोपशम से किंचित् मति-श्रुतज्ञान कदाचित् अवधिज्ञान पाया जाता है तथा अचक्षुदर्शन और कदाचित् चक्षुदर्शन, अवधिदर्शन भी पाया जाता है।

प्रश्न : मतिज्ञान की प्रवृत्ति का वर्णन कीजिये।

उत्तर : मतिज्ञान पंचेन्द्रिय और मन की पराधीनतापूर्वक क्षयोपशम के अनुसार थोड़ा-बहुत जानता है।

प्रश्न : श्रुतज्ञान किसे कहते हैं ?

उत्तर : मतिज्ञान द्वारा जाने हुये पदार्थ के संबंध से अन्य पदार्थ को जानने वाला श्रुतज्ञान है। यह मुख्यरूप से अक्षरात्मक और अनक्षरात्मक रूप दो प्रकार का है।

प्रश्न : अक्षरात्मक श्रुतज्ञान को समझाइये।

उत्तर : 'घट' शब्द सुनना/देखना वह मतिज्ञान हुआ और उसके संबंध से आकार विशेष रूप वस्तु का ज्ञान अक्षरात्मक श्रुतज्ञान कहलायेगा।

प्रश्न : अनक्षरात्मक श्रुतज्ञान को समझाइये।

उत्तर : स्पर्श द्वारा शीत का जानना मतिज्ञान हुआ और यह हितकारी/अहितकारी है, इसलिये उसका उपाय करना इस रूप ज्ञान अनक्षरात्मक श्रुतज्ञान हुआ। यह भी मतिज्ञानपूर्वक होने से मतिज्ञान की भांति पराधीन है।

प्रश्न : अवधिज्ञान का स्वरूप बताइये।

उत्तर : अपनी मर्यादा के अनुसार क्षेत्र काल का प्रमाण लेकर रूपी पदार्थों का स्पष्ट जानना अवधिज्ञान है। देव/नारकी को तो यह जन्म से ही होता है तथा संज्ञी पंचेन्द्रिय तिर्यंच या मनुष्य में भी किसी किसी को पाया जाता है।

प्रश्न : दर्शनोपयोग किसे कहते हैं ?

उत्तर : इन्द्रिय तथा मन को स्पर्शादि विषयों का संबंध होने के प्रथम काल में मतिज्ञान से पूर्व जो सामान्य अवलोकन रूप प्रतिभास होता है, उसे दर्शनोपयोग कहते हैं। चक्षु इन्द्रिय द्वारा होने वाला दर्शनोपयोग चक्षुदर्शन तथा शेष चार इन्द्रिय और मन द्वारा होने वाला दर्शनोपयोग अचक्षुदर्शन कहलाता है और अवधिज्ञान के पूर्व होने वाला सामान्य प्रतिभास 2अवधिदर्शन कहलाता है। चूंकि यह मति/अवधिज्ञान के पूर्व होता है, अत: मतिज्ञान/अवधिज्ञान जैसा ही पराधीन है।

प्रश्न : दर्शन मोहनीय कर्म के उदय में जीव की अवस्था का वर्णन कीजिये।

उत्तर : दर्शन मोह के उदय से जीव को मिथ्यात्व भाव होता है, उससे यह जीव अन्यथा प्रतीतिरूप अतत्त्वश्रद्धान करता है। जैसी वस्तु है वैसी न मानकर अन्यथा मानता है।

प्रश्न : चारित्र मोह के उदयरूप जीव की अवस्था का वर्णन कीजिये।

उत्तर : चारित्र मोह के उदय से इस जीव को कषायभाव होता है, तब यह देखते-जानते हुये भी परपदार्थों में इष्ट-अनिष्टपना मानता है। क्रोध का उदय होने पर पदार्थों में अनिष्टपना मानकर उनका बुरा चाहता है। मान का उदय होने पर पदार्थों में अनिष्टपना मानकर उसे नीचा करना चाहता है। माया का उदय होने पर पदार्थों में अनिष्ट/इष्टपना मानकर छल से ग्रहण/त्याग करना चाहता है। लोभ का उदय होने पर पदार्थों में अनिष्ट/इष्टपना मानकर प्राप्त करना चाहता है।

प्रश्न : अन्तराय कर्मों के उदय रूप जीव की अवस्था का वर्णन कीजिये।

उत्तर : अन्तराय के उदय में जीव की शक्ति का घात होता है। जो चाहे सो नहीं होता।

प्रश्न : वेदनीय कर्म के उदय में जीव की अवस्था का वर्णन कीजिये।

उत्तर : अघातिया कर्मों में वेदनीय कर्म के उदय से शरीर में बाह्य सुख-दु:ख के कारण उत्पन्न होते हैं। साता वेदनीय के उदय के निमित्त से सुख के और असातावेदनीय के निमित्त से दु:ख के कारण मिलते हैं। यहाँ विशेष यह है कि वे कारण ही सुख दु:ख को उत्पन्न नहीं करते, अपितु मोह का उदय होने पर यह जीव स्वयं उनसे अपने को सुखी-दु:खी मानता है। इसलिये सुख-दु:ख का मूल बलवान कारण मोह का उदय है।

प्रश्न : आयु कर्मोदयजन्य जीव की अवस्था का वर्णन कीजिये।

उत्तर : आयुकर्म के उदय में मनुष्यादि पर्यायों की स्थिति रहती है। जब तक आयु का उदय रहता है, तब तक अनेक कारण मिलने पर भी शरीर का संबंध नहीं छूटता और आयु का उदय समाप्त होते ही अनेक उपाय करने पर भी शरीर का संबंध नहीं रहता।

प्रश्न : नामकर्म उदयजन्य जीव की अवस्था का वर्णन कीजिये।

उत्तर : नामकर्म से यह जीव मनुष्यादि गतियों को प्राप्त करता है और उसके योग्य अनेक प्रकार की रचना स्वयमेव होती है।

प्रश्न : गोत्र कर्मोदयजन्य जीव की अवस्था का वर्णन कीजिये।

उत्तर : गोत्र कर्म के उदय में यह जीव उच्च नीच कुल में उत्पन्न होता है।

– पीयूष जैन, संयोजक

स्वर्ण जयंती के कीर्तिमान अगले अंक में...

51वाँ स्वर्ण जयंती प्रशिक्षण शिविर अनेक कीर्तिमान स्थापित करते हुये आशातीत सफलता के साथ संपन्न हुआ है। यह सब हमारे अनन्य सहयोगियों के संपूर्ण समर्पण के कारण ही संभव हो सका है। शिविर के कीर्तिमान एवं सहयोगियों की विस्तृत जानकारी अगले अंक में दी जायेगी।

– ब्र. अमित भैया, विदिशा

कनाडा में अभूतपूर्व धर्मप्रभावना

(1) एडमोंटोन (कनाडा) : यहाँ दिनांक 24 से 30 मई तक डॉ. संजीवकुमारजी गोधा जयपुर द्वारा प्रतिदिन प्रात: लगभग 3 घंटे में नित्य नियम पूजन के साथ सीमंधर पूजन एवं सिद्ध पूजन पर मार्मिक व्याख्यान का लाभ मिला। साथ ही प्रतिदिन सायंकाल अष्टकर्म को आधार बनाकर मार्मिक प्रवचन हुये। एक दिन लगभग 200 साधर्मियों की उपस्थिति में पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट का परिचय एवं सम्मेदशिखर हेतु स्वर्ण जयंती का आमंत्रण दिया गया। वहाँ उपस्थित लोगों में से सिर्फ दो ही लोग टोडरमल स्मारक के बारे में थोड़ा बहुत जानते थे। जब उनको टोडरमल स्मारक के कार्यों एवं गतिविधियों का विस्तृत परिचय दिया गया तो सभी ने मुक्तकंठ से प्रशंसा की। कुछ लोगों ने तो स्मारक की भूमि पर एक बार अवश्य आकर जीवन धन्य करने की बात कही। ज्ञातव्य है कि यहाँ अन्य कोई जैन विद्वान पहले कभी नहीं आये। **– सम्यक् शाह**

(2) टोरंटो (कनाडा) : यहाँ नवनिर्मित श्री आदिनाथ दिगम्बर जैन मंदिर में दिनांक 1 से 5 जून तक डॉ. संजीवकुमारजी गोधा जयपुर द्वारा अपूर्व धर्मप्रभावना हुई।

इस प्रसंग पर पंच परावर्तन, समवशरण का स्वरूप एवं तीन लोक आदि विषयों पर सारगर्भित प्रवचनों के अतिरिक्त प्रतिदिन मोक्षमार्गप्रकाशक पर मार्मिक प्रवचनों का लाभ मिला। शनिवार एवं रविवार को प्रात: अर्थ सहित पूजन एवं सायंकाल जिनेन्द्र भक्ति का कार्यक्रम भी हुआ यहाँ भी एक दिन टोडरमल स्मारक का परिचय एवं स्वर्ण जयंती का आमंत्रण दिया गया।

(पृष्ठ 1 का शेष...)

से शिखरजी में पधारकर स्वर्ण जयंती समारोह व समयसार विधान में सम्मिलित होने की अपील की। इसके अतिरिक्त अभयजी शास्त्री ने कहा कि सामान्यत: समाज विद्वानों को आमंत्रण देता है, परन्तु आज विद्वात्गण समाज को आमंत्रण दे रहे हैं। सभा में उपस्थित लगभग 2 हजार शिविरार्थियों ने हाथ उठाकर शिखरजी में आने की भावना व्यक्त की।

कार्यक्रम का संचालन श्री शुद्धात्मप्रकाशजी भारिल्ल ने किया।

इस कार्यक्रम के पूर्व दिनांक 1 से 6 फरवरी 2017 तक दीवानगंज-भोपाल में होने वाले पंचकल्याणक का आमंत्रण दिया गया।

प्रकाशन तिथि : 13 जून 2016

प्रति,

सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** शास्त्री, न्यायतीर्थ, साहित्यरत्न, एम.ए., बी.एड.
सह-सम्पादक : **डॉ.संजीवकुमार गोधा**, एम.ए.द्वय, नेट, एम.फिल (जैनदर्शन), पीएच.डी. एवं **पण्डित परमात्मप्रकाश भारिल्ल**
प्रकाशक एवं मुद्रक : **ब्र. यशपाल जैन** द्वारा जैनपथप्रदर्शक समिति के लिए जयपुर प्रिण्टर्स प्रा.लि., जयपुर से मुद्रित तथा त्रिमूर्ति कम्प्यूटर्स, श्री टोडरमल स्मारक भवन, ए-४, बापूनगर, जयपुर से प्रकाशित।

यदि न पहुँचे तो निम्न पते पर भेजें -
ए- 4 बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)
फोन : (0141) 2705581, 2707458
E-Mail : ptstjaipur@yahoo.com **फैक्स :** (0141) 2704127